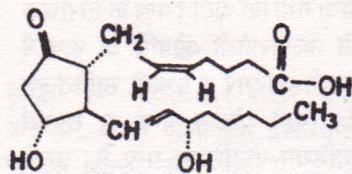


समाहित मैगनिशियम व एल्यूमिनियम के हाइड्रॉक्साइड सेलिसिलेट आयनों के कारण आमाशय की श्लेष्मा को होने वाले की क्षति रोकते हैं। श्लेष्मा को संरक्षित करने की यह क्रिया आमाशय में प्रोस्टाग्लैंडिन बनने के कारण नहीं होती (देखें बॉक्स 2)।

हाइड्रोटेल्साइट एक असहनीय पीड़ादायक रोग के लिए आरामदायक मलहम समान है। इस तरह आधुनिक युग की अनियंत्रित व तनावपूर्ण जीवनशैली के कारण अस्तित्व में आई व्याधि हेतु प्रकृति द्वारा प्रदत्त उपचार मिल गया है। मानव अल्सर पैदा करता है तो मिट्टी उसका उपचार करती है। (स्रोत फीचर्स)

प्रोस्टाग्लैंडिन

प्रोस्टाग्लैंडिन तकरीबन हर ऊतक और शरीर के द्रव में पाए जाने वाले रसायन होते हैं। कोशिकाओं की क्षति होने पर प्रोस्टाग्लैंडिन उस क्षतिग्रस्त हिस्से में फैल जाते हैं जिससे जलन पैदा होती है। दर्द के संवेदन, बुखार तथा आमाशय की भित्ति के संरक्षण में भी प्रोस्टाग्लैंडिन



प्रोस्टाग्लैंडिन ई₂ (सर्वाधिक पाया जाने वाला और सर्वाधिक सक्रिय प्रोस्टाग्लैंडिन)

महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सेलिसिलिक अम्ल और अन्य जलनरोधी औषधियां प्रोस्टाग्लैंडिन के निर्माण को कम कर देती हैं। इसके कारण आमाशय की भित्तियां आमाशय से स्रावित अम्ल और पेप्सिन के समक्ष कमजोर पड़ सकती हैं जिससे उनमें छाले पड़ जाते हैं।

विज्ञान समाचार

कंगाली में आटा गीला

डा यबिटीज़ (मधुमेह) के मरीजों की दो श्रेणियां होती हैं। एक तो वे जिन्हें इंसुलिन पर निर्भर नहीं रहना पड़ता और दूसरे वे जिन्हें इंसुलिन पर निर्भर रहना जरूरी हो जाता है। इंसुलिन पर निर्भर न रहने वाले टाइप-2 में और इंसुलिन पर निर्भर रहने वाले टाइप-1 की श्रेणी में आते हैं। अब पता चला है कि टाइप-1 वाले मरीजों को ऑस्टियो-पोरोसिस (हड्डियों का खोखलापन) का खतरा बहुत ज्यादा होता है।

एक रपट के मुताबिक फिनलैण्ड के वैज्ञानिकों ने डायबिटीज़ से ग्रस्त 600 लोगों की हड्डियों की सघनता का जायजा लिया तो पता चला कि 'टाइप-2' श्रेणी वाले लोगों को ऑस्टियोपोरोसिस का खतरा नहीं होता। फिनलैण्ड स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ टुरकू के शोधकर्ता तपानी रोन्नेमा का कहना है कि इंसुलिन पर निर्भर लोगों को अपने डॉक्टर से सलाह

मशविरा कर ऑस्टियोपोरोसिस से बचाव के उपाय और इलाज फौरन शुरू कर देना चाहिए। इसके अलावा वे बोन डेंसिटी टेस्ट (हड्डी घनत्व जांच) कराने की भी सलाह देते हैं।

दुर्भाग्य से हमारे देश में फिलहाल 16 मशीनें ही उपलब्ध हैं, जो 'डुअल एनर्जी एक्स-रे एब्ज़ॉर्बशियोमेट्री' या 'डेक्सा-बोन डेंसिटोमेट्री' टेस्ट कर सकती हैं। इस टेस्ट में छाती के एक्स-रे की तुलना में विकिरण की तीव्रता लगभग 1/10 होती है और मुकम्मल जांच में सिर्फ 10 मिनट का वक्त लगता है। इस टेस्ट के लिए पहले से कोई तैयारी नहीं करनी पड़ती। इस टेस्ट की मदद से यह भी पता चल जाता है कि अस्थि (हड्डी) क्षरण कितनी तेज़ी से हो रहा है और हड्डियों पर इलाज का क्या असर पड़ता है। (स्रोत फीचर्स)